National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040
Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 849-851

भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय अस्मिता का प्रश्न

जितेन्द्र कुमार
आई.सी.एस.एस.आर. डॉक्टोरल फेलो, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
देश में असमान विकास की प्रक्रिया के कारण एवं क्षेत्रीय विविधता के कारण क्षेत्रीय समस्याएं उत्पन्न हुई इन समस्याओं को समझने में एक केंद्रीकृत सत्ता विफल रही। अतः इसने क्षेत्रीय राजनीतिक दलों को जन्म दिया। क्षेत्रीय राजनीतिक दल क्षेत्रीय समस्याओं से अवगत होते हैं अतः सक्षम तरीके से इनका समाधान कर सकते हैं, यह क्षेत्रीय समस्या ही है जो कि ऐसे दलों का अस्तित्व का आधार है। भारतीय राजनीति में राष्ट्रीय नेताओं की कमी के कारण भी क्षेत्रीय नेतृत्व का महत्व बढ़ा है, ऐसे में क्षेत्रवाद का राजनीतिक प्रयोग होता रहा है। चूँकि इस समस्या का मुख्य आधार क्षेत्रीय असमानता है अतः देश का समान विकास ही इसका समाधान भी है। क्षेत्रीय सहिष्णुता एवं सत्ता का विकेंद्रीकरण भी इस समस्या को कम कर सकता है। राष्ट्रवाद की भावना के आधार पर भी देश का एकीकरण क्षेत्रवाद को कमजोर कर सकता है।

मूल शब्द : क्षेत्रवाद, राजनीतिक दल, असमान विकास, संस्कृति, आर्थिक असंतुलन, राजनीतिक हित, इत्यादि।

प्रस्तावना
क्षेत्र उस भू–भाग को कहते हैं जिसमे संस्कृति अथवा इतिहास के रूप में कुछ–न–कुछ साझा होता है। एक क्षेत्र की महत्वाकांक्षाएँ एवं समस्याएं भी समान हो सकती हैं। जब किसी क्षेत्र के निवासी इस साझा सम्बन्ध के कारण अपने क्षेत्र विशेष की भावना से भावनात्मक रूप से जुड़ जाएँ एवं अपने क्षेत्र को अपनी पहचान से जोड़कर देखें, साथ ही यदि वे यह मान लें कि उनके क्षेत्र के हित अन्य क्षेत्रों के हितों से भिन्न हैं, तब यह भावना क्षेत्रवाद कहलाती है परन्तु यह क्षेत्रवाद का उदार प्रारूप है जो कि जो कि क्षेत्रीय हितों को तो पूरा कर सकता है साथ ही यह राष्ट्रीय अखंडता के लिए भी कोई खतरा नहीं है। इससे भिन्न यदि एक क्षेत्र विशेष के निवासी यह मान लें कि अन्य क्षेत्रों के क्षेत्रीय हित न सिर्फ उनसे भिन्न हैं बल्कि उनके हितों के विरोधाभाषी भी हैं तब यह उग्र–क्षेत्रवाद कहलाता है। उग्र–क्षेत्रवाद, क्षेत्रीय हितों को राष्ट्रीय हितों की तुलना में प्राथमिकता देता है जिससे क्षेत्रीय संघर्ष को बढ़ावा मिलता है।

भारत विविध क्षेत्रों का एक समीकरण रहा है द्य ऐसे क्षेत्र जिनका इतिहास भिन्न रहा है एवं जिनकी संस्कृति भी एकदूसरे से भिन्न रही है। अतः भारत में क्षेत्रवाद एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है। जिसने समयानुसार अपने आपको और ज्यादा ठोस बनाया है। भारत में उग्र–क्षेत्रवाद अपने आपको अलगाववादी आन्दोलनों, नए राज्य की मांग, प्रवासी श्रमिकों पर अत्याचार, विद्यार्थियों से भेदभाव, नदी जल बंटवारे से सम्बंधित विवाद इत्यादि के रूप में अभिव्यक्ति करता है। आजादी के उपरांत देश में असमान विकास देखा गया। कुछ राज्यों ने निरंतर प्रगति की जबकि कुछ राज्य पिछड़े रहे गए। इस विकास की प्रक्रिया में मूल्य किसी और क्षेत्र ने चुकाया जबकि लाभ किसी और को प्राप्त हुआ अर्थात संसाधनों का दोहन किसी क्षेत्र से और विकास किसी अन्य क्षेत्र का हुआ। इस प्रक्रिया में पिछड़े क्षेत्र पराश्रित होते चले गए इसने तुलनात्मक अभाव की भावना को जन्म दिया। जिसके कारण समाज में क्षेत्रीय तनाव उत्पन्न हुआ।

भारत में क्षेत्रवाद की भावना के बीज भारत की सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था में देखे जा सकते हैं। जिसके कारण राष्ट्रीय अस्मिता के स्थान पर क्षेत्रीय अस्मिता को प्राथमिकता दी जाने लगी। भारत एक बहुधार्मिक, बहुभाषायी, बहुसांस्कृतिक तथा बहुजातीय देश है। जहाँ विविध समूहों के अपने–अपने विशेष हित एवं स्वार्थ हैं तथा प्रायः उनके मध्य इस सन्दर्भ में हितों का संघर्ष भी होता है। ऐसे में परस्पर विद्वेष एवं प्रतिद्वंदिता की भावना पारस्परिक विश्वास में कमी लाती है। भारत में क्षेत्रवाद के विभिन्न कारण हैं, जिनका उल्लेख निम्नवत रूप से किया जा सकता है :

- भारत ऐतिहासिक रूप से विभिन्न क्षेत्रों, संस्कृतियों, सामाजिक मिथकों, लोक परम्पराओं इत्यादि में विभक्त है, इस प्रकार के तत्वों से क्षेत्रीय अस्मिता को बल मिलता है।
- भारत में अलग–अलग भाषाएँ बोली जाती हैं जिसके कारण एक क्षेत्र विशेष के लोग, किसी अन्य क्षेत्र की भाषा के प्रति सद्भावना नही रख पाते एवं टकराहट का जन्म होता है। यह उल्लेखनीय है स्वतंत्रता के पूर्व कांग्रेस द्वारा भाषायी आधार पर राज्यों के पुनर्गठन को स्वीकृति दि गयी थी, परन्तु स्वतंत्रता के पश्चात इस दिशा में सकारात्मक प्रयास नहीं हुए। इसके फलस्वरूप भारत के विभिन्न क्षेत्रों में भाषायी आधार पर राज्यों का पुनर्गठन हेतु आन्दोलन प्रारंभ हुए, जिसने राजनीतिक व्यवस्था में उग्र क्षेत्रवादी भावनाओं को बढ़ावा दिया। इसी क्रम में आंध्रप्रदेश के गाँधीवादी नेता श्रीरामालु की आमरण अनसन के दौरान मृत्यु ने भाषायी आन्दोलन को उग्र एवं हिंसक बना दिया। जिसे ध्यान में रखते हुए फजल अली की अध्यक्षता में 1953 में प्रथम राज्य पुनर्गठन आयोग का गठन किया गया तथा 1956 में भाषायी आधार पर अनेक राज्यों का पुनर्गठन भी हुआ। भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की इसी भावना के अनुरूप देश के विभिन्न भागों में अलग राज्य की मांग उठने लगी। इस प्रकार भाषायी विविधता के कारण क्षेत्रवाद की प्रवृतियाँ तेजी से बढी। वस्तुतः इसके पीछे पहचान एवं स्वायत्तता को सुरक्षित करने की भावना अन्तर्निहित थी।
- भारत में विकास का स्वरुप एवं प्रभाव समान रूप से प्रत्येक

क्षेत्र में नहीं देखा गया, जिसने प्रादेशिक विषमता को बढ़ावा दिया। इस क्षेत्रीय आर्थिक असंतुलन ने भी क्षेत्रवाद को बढ़ावा दिया जिसका कारण था की कुछ राज्य अत्यधिक विकसित एवं सामाजिक–आर्थिक संकेतकों में आगे थे , वहीं अनेक राज्य अत्यधिक पिछड़े एवं विभिन्न सामाजिक–आर्थिक समस्याओं से ग्रसित थे। इससे देश में राजनीतिक व्यवस्था के क्रियाविधि पर प्रश्न उठे। केंद्र ने राज्य सरकारों को और राज्यों ने केंद्र सरकार को इस पिछड़ेपन का कारण माना। परिणामस्वरूप राजनीतिक व्यवस्था में उग्र एवं अतिवादी क्षेत्रीय मांगे राज्यों की ओर से प्रस्तुत की गयीं द्य पंजाब में अकाली दल ने रक्षा और विदेशी मामलों के अतिरिक्त समस्त शक्तियां राज्यों को सौंपने की मांग की। इसी प्रकार की मांग तमिलनाडु के राजमन्नार आयोग तथा पश्चिम बंगाल सरकार के प्रतिवेदन द्वारा भी की गयी।

- भारत के कई राज्य भौगोलिक दृष्टि से विशाल हैं। इन बड़े राज्यो, जैसे उत्तर–प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र में छोटे–छोटे महत्वपूर्ण क्षेत्र भौगोलिक इकाई बन सकते हैं। मध्यप्रदेश में मालवा क्षेत्र, राजस्थान में मेवाड़ और मारवाड़ का क्षेत्र, महाराष्ट्र में विदर्भ का क्षेत्र, उत्तरप्रदेश में पूर्वांचल और बुंदेलखंड का क्षेत्र इत्यादि को यदि अलग राज्य का दर्जा दे दिया जाये भी ये केरल और नागालैंड से बड़े राज्य होंगे। अतः भौगोलिक विषमता ने भी क्षेत्रवाद के प्रसार में अपना योगदान दिया है।
- भारत में अनेक राज्यों के निवासी अपनी संस्कृति को श्रेष्ठ मानते हैं और इस आधार पर राज्य के निर्माण अथवा किसी राज्य से अलग नवीन राज्य के निर्माण की मांग करते हैं, इससे भी क्षेत्रीय अस्मिता बलवती होती है।
- भारत राजनीति में जातिवाद और धर्म एक प्रमुख उपादान रहे है। जाति के आधार पर भी क्षेत्रीयता की प्रवृत्ति बढ़ी है। जिन क्षेत्रों में किसी एक जाति की प्रधानता रही है, वहां क्षेत्रवाद की प्रवृत्ति उभरी है। विशेषकर हरियाणा और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में क्षेत्रवाद के लिए जाति महत्वपूर्ण रूप से उत्तरदायी है। रजनी कोठारी के अनुसार, 'यद्यपि जतिव्यवस्था क्षेत्रवाद के लिए अपने आप में महत्वपूर्ण नहीं है परन्तु जहाँ वह आर्थिक हितों (जैसे महाराष्ट्र में मराठा जाति), भाषायी समुदायों (तमिलनाडु में तमिल भाषी और ब्राह्मण जातियां) और धर्म (पंजाब में सिक्ख धर्म और जाति) के साथ जुडी वहां यह क्षेत्रवाद को प्रबल बनाने में अत्यधिक सहायक होती है।
- 1990 के बाद प्रारंभ हुई गठबंधन की राजनीति ने क्षेत्रीय दलों का महत्व बढा दिया और 'पैकेज एवं विशेष राज्य की मांग' की राजनीति प्रारंभ हुई। वस्तुतः क्षेत्रवाद की भावना को नकारामक रूप देने एवं इसकी गंभीरता एवं दुष्प्रभाव को बढ़ाने में अनेक राजनीतिक दलों, संगठनों एवं समूहों का योगदान है।
- भारत में भूमिपुत्र की अवधारणा भी क्षेत्रवाद को बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध हुई है द्य इससे आशय यह है कि किसी प्रदेश (राज्य) के मूल निवासियों द्वारा उस राज्य में बसने और रोजगार के अवसर प्राप्त करने, आदि के सम्बन्ध में विशेष संरक्षण की मांग की जाय द्य इन मांगों के साथ यह बात जुडी हुई है कि जब उस राज्य या क्षेत्र के सभी मूल निवासियों को रोजगार प्राप्त न हो जाये तब तक राज्य के बाहरी व्यक्तियों को रोजगार की सुविधा नहीं दी जानी चाहिए। असम में असम गण परिषद्, महाराष्ट्र में शिवसेना एवं म.न.से. और झारखंड में झारखंड मुक्तिमोर्चा जैसे राजनीतिक दलों ने भूमिपुत्र की अवधारणा को अपने राजनीतिक हित के लिए प्रयुक्त किया।

भारत में समय–समय पर क्षेत्रीय अस्मिता के संरक्षण हेतु राज्यों का विभाजन हुआ है और वर्तमान में भी छोटे राज्यों के मांग की प्रवृत्ति उत्तरोत्तर बढ़ी है। राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिश के आधार 1956 में 14 राज्यों एवं 6 संघशासित क्षेत्रों का गठन किया गया। इसी क्रम 1960 में गुजरात, 1963 में नागालैंड, 1966 में हरियाणा एवं पंजाब, 1971 में हिमाचल प्रदेश, 1972 में सीक्किम, 1987 में अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम और गोवा तथा 2000 में उत्तराखंड, झारखंड और छत्तीसगढ़ का निर्माण हुआ। इन सभी राज्यों के गठन के पीछे क्षेत्रवाद को तुष्ट करने की भावना प्रमुख रूप से उत्तरदायी है।

उत्तर–प्रदेश को चार भागों में विभक्त करने की मांग होती रही है। पश्चिमी उत्तरप्रदेश को हरित प्रदेश बनाने की मांग, उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश के कई जिलों को मिलाकर बुंदेलखंड राज्य की मांग, उत्तरप्रदेश के 27 पूर्वी जिलों तथा बिहार के कुछ जिलों को मिलाकर पूर्वांचल राज्य बनाने की मांग और इसके साथ ही अवध प्रान्त की भी मांग, विभिन्न आधारों पर होती रही है। पश्चिम बंगाल के उत्तरी क्षेत्र गोरखालैंड को अलग राज्य बनाने की मांग 1907 में ही शुरू हो गयी थी। 1917 में हिलमैन एसोसिएशन के गठन के साथ इस आन्दोलन ने गति पकड़ी। 1986 में गोरखा नेशनल लिबरेशन फ्रंट के नेतृत्व में नए राज्य के गठन को लेकर उग्र प्रदर्शन एवं आन्दोलन निरंतर चला आ रहा है द्य इसके साथ ही असम में बोडोलैंड राज्य की मांग, महाराष्ट्र में विदर्भ राज्य की मांग और गुजरात में सौराष्ट्र राज्य की मांग भयावह रूप लेती हैं। 2 जून, 2014 को, अनवरत आन्दोलनों और हिंसा के बाद, आंध्रप्रदेश से विभाजित कर तेलंगाना को एक अलग राज्य बना दिया गया है। क्षेत्रवाद राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को स्थापित करने के दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण चुनौती है जिससे निपटने हेतु अधोलिखित उपाय किये जा सकते हैं :

- संघीय सरकार की नीति इस प्रकार होनी चाहिए कि सभी उप–सांस्कृतिक क्षेत्रों का संतुलित आर्थिक विकास संभव हो सके, जिससे विभिन्न क्षेत्रों के बीच आर्थिक तनाव न्यूनतम हो।
- सभी क्षेत्रों के लोगों को सामान आर्थिक सुविधाएँ प्रदान की जाएँ जिससे की अनावश्यक प्रतिस्पर्धा की भावना न पनप सके।
- भाषायी विवादों का हल शीघ्र ही ढूंढ लिया जाये द्य इस सम्बन्ध में सबसे उचित हल यह है कि सभी क्षेत्रीय भाषाओँ को समान मान्यता प्रदान की जाये।
- केंद्रीय मंत्रिमंडल में सभी क्षेत्रों के नेताओं का संतुलित प्रतिनिधित्व हो जिससे कि क्षेत्रीय पक्षपात पूर्ण नीतियों का खंडन हो सके।

सन्दर्भ

1. रिलीजन, कास्ट एंड पालिटिक्स इन इण्डिया : क्रिस्टोफ जफरलोट
2. इण्डिया एट द पोल्स , पार्लियाँमेंन्ट्री इलेक्शन इन द फेडरल फेज : एम् पी सिंह एंड रेखा सक्सेना
3. भारत में राजनीतिक प्रक्रियायें, सम्पादक : बी एन चौधरी
4. लोकतंत्र के सात अध्याय , सम्पादक : अभय कुमार दुबे
5. लोकसभा चुनाव , गणित एवं निहितार्थ में प्रतिमान : राहुल वर्मा एवं नरेश गोस्वामी
6. भारत का सविधान : सुभाष कश्यप
7. पॉलिटिक्स इन इंडिया : रजनी कोठारी
8. भारत में जातिवाद : रजनी पाम दत्त
9. भारत में शासन प्रणाली : गाँधी जी राय , भारती भवन पटना
10. मेजरिंग वोटिंग बिहेविअर इन इंडिया : संजय कुमार

11. पॉलिटिक्स ऑफ रीजन एंड रिलिजन इन इंडिया : पी.के.दत्ता
12. वोटिंग बिहेविअर इन चेंजिंग सोसाइटी रू एस.पी वर्मा एंड इकबाल नारायण
13. कास्ट एंड वोटिंग बिहेविअर : ओ.पी. गोयल
14. इंडियन एक्सप्रेस, द हिन्दू, दैनिक जागरण एवं जनसत्ता जैसे समाचार पत्रों के लेख